वर्ष-10//अंक-27// दिसंबर // 2023
ISSN 2454–5805

आम आदमी पत्रिका®

एक आम इंसान की सोच

RNI NO.: CHHHIN/2013/50684

कांग्रेस की गारंटियों पर भारी पड़ा 'मोदी मैजिक'

मोदी की गारंटी को महतारियों का वंदन

बृजमोहन ने बनाया रिकॉर्ड, 67,000 मतों से जीते

06

17 दिन बाद मौत के मुंह से बाहर निकले सभी 41 श्रमिक

08

फॉक्स स्टोरी मैगजीन ने 100 प्रभावशाली भारतीय की सूची में छत्तीसगढ़ के अंकित यादव को दिया पहला स्थान

19

66 हजार की लीड से जीते ओपी चौधरी

www.aamaadmi.in

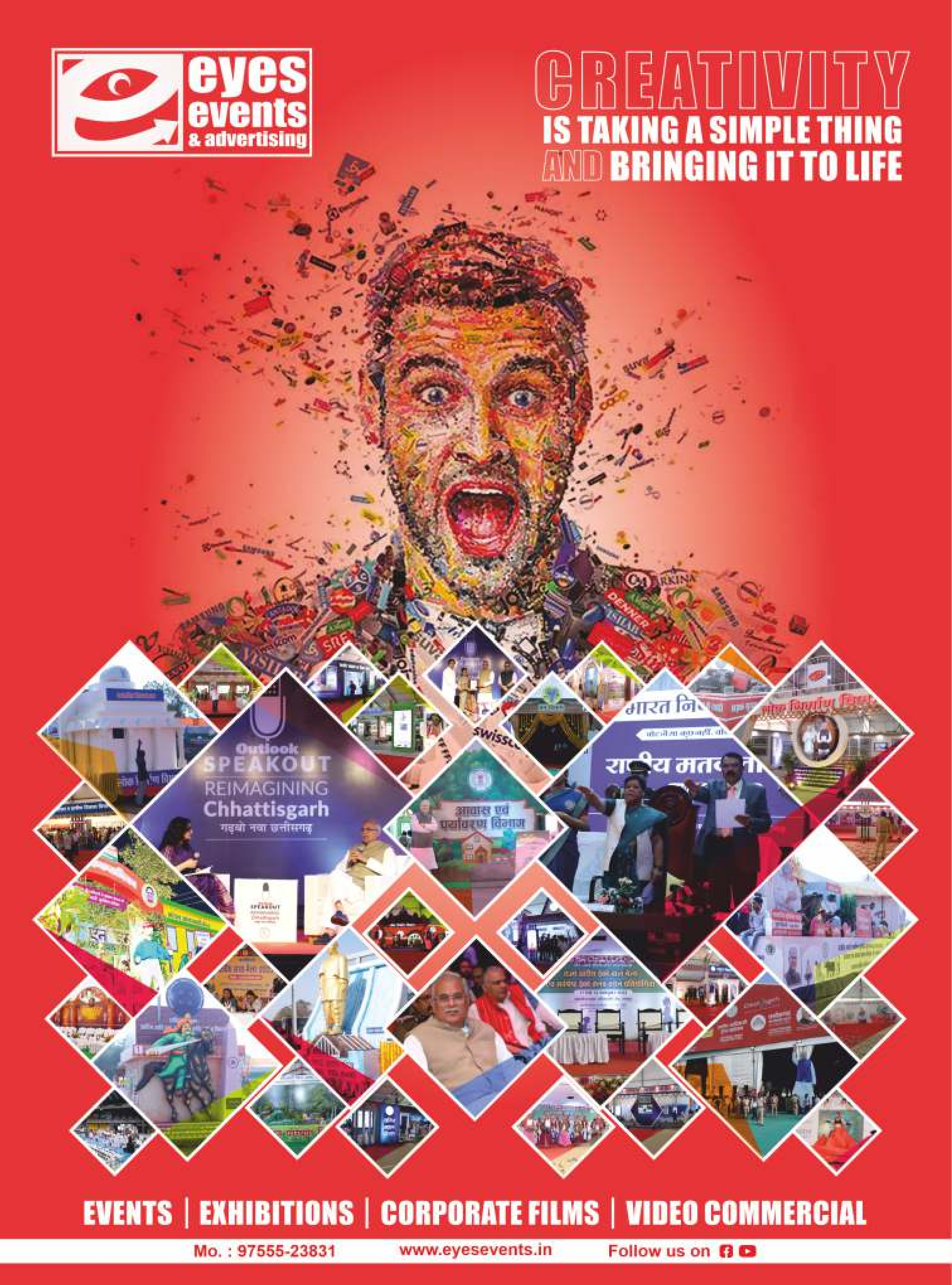
eyes events & advertising
CREATIVITY
IS TAKING A SIMPLE THING
AND BRINGING IT TO LIFE
Outlook SPEAKOUT
REIMAGINING Chhattisgarh
गढ़बो नवा छत्तीसगढ़
आवास एवं पर्यावरण विभाग
EVENTS | EXHIBITIONS | CORPORATE FILMS | VIDEO COMMERCIAL
Mo. : 97555-23831
www.eyesevents.in
Follow us on

आम आदमी पत्रिका

वर्ष-10//अंक-27// दिसंबर // 2023

प्रबंध संपादक	:	उमेश के बंसी
सर्कुलेशन इंचार्ज	:	प्रकाश बंसी
रिपोर्टर	:	नेहा श्रीवास्तव
कंटेंट राईटर	:	प्रशांत पारिक
क्रिएटिव डिजाइनर	:	देवेन्द्र देवांगन
मैग्ज़ीन डिज़ाइनर	:	आइज इवेंट्स
मार्केटिंग मैनेजर	:	किरण नायक
एडमिनिस्ट्रेशन	:	कुसुम श्रीवास्तव
अकाउंट असिस्टेंट	:	प्रियंका सिंह
ऑफिस कॉर्डिनेटर	:	योगेन्द्र बिसेन

प्रधान कार्यालय

965/1 कक्कड़ चौक, श्याम नगर रोड,
कटोरा तालाब,रायपुर, छत्तीसगढ़

फोन : 0771-4044047

ईल : khabar@aamaadmi.in

कार्यालय

प्लाट नं.118, कंचन बाग, राजनांदगांव

प्रकाशक

उमेश कुमार बंसी, क्वाटर नंबर 10, एम.एम. रियल स्टेट कॉलोनी, अमलीडीह, रायपुर (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं मुद्रित

विशेष- इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिये गए विचार, लेखकों के अपने है। इसमें संपादक / मुद्रक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में संपादक / मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा। इस पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद के लिए सुनवाई क्षेत्र रायपुर न्यायालय होगा।

अनुक्रमणिका

दिसंबर 2023

इस अंक में

रायपुर. विधानसभा चुनाव परिणाम खासकर कांग्रेस के लिए अप्रत्याशित रहे. कांग्रेस यह मानकर चल रही थी कि जनादेश उसे ही मिलेगा. भाजपा पूरी रणनीति के साथ काम कर रही थी, परिस्थितियां देखकर भाजपा ने रणनीति भी बदली लेकिन अति आत्मविश्वास से भरी कांग्रेस ने रणनीति में कोई बदलाव नहीं किया.

22

छत्तीसगढ़ विधानसभा में 18 महिला प्रत्याशी संभालेंगी मोर्चा

25

रायपुर. इस बार विधानसभा चुनाव में 90 सीटों में से कई सीटों पर भाजपा-कांग्रेस ने कई महिला प्रत्याशियों को मैदान में उतारा हैं. इसमें भाजपा के 15 तो वहीं कांग्रेस के 18 महिला कैंडिडेट शामिल हैं.

महतारी वंदन, कुछ सीटों पर भीतरघात व भाजपा की बेहतर रणनीति पड़ी भारी

26

रायपुर. छत्तीसगढ़ में महिला प्रत्याशी और ऊपर से महतारी वंदन योजना भाजपा के लिए संजीवनी साबित हुई.

चुनावी रण में 9 मंत्रियों को मिली करारी शिकस्त, उप मुख्यमंत्री सिंहदेव भी हारे

28

रायपुर. छत्तीसगढ़ विधानसभा की 90 सीटों के लिए मतगणना परिणाम के करीब पहुंच चुकी है. जिसके मुताबिक प्रदेश के 9 मंत्री अपने निकट प्रतिद्वंदी से मात खा गए हैं.

बस्तर संभाग की 8 सीटों पर भाजपा की जीत, PCC चीफ, मरकाम नहीं बचा पाए अपनी कुर्सी

30

रायपुर. छत्तीसगढ़ में बस्तर संभाग के सभी सीटों में वोटों की गिनती पूरी हो गई है. 12 सीटों में से सिर्फ 4 में कांग्रेस को जीत मिली है. वहीं भाजपा ने 8 सीटों पर कब्जा जमाया है.

उल्टा पड़ गया सियासी पैतरा: कांग्रेस को ले डूबी ये 22 सीटें, काटा था सिटिंग MLA का टिकट

31

रायपुर. छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सिटिंग एमलए की टिकट काटना मंहगा पड़ गया. जिसका फायदा बीजेपी को मिला है.

पुरंदर मिश्रा का 'चला' करिश्मा! रिकार्ड मतों से 'जुनेजा' को चटाई धूल

36

छत्तीसगढ़. जनता ने चौंकाने वाले नतीजे दिए है. इसी कड़ी में पुरंदर मिश्रा ने 25 हजार मतों से कुलदीप जुनेजा को करारी हार दी है.

हार से घटक दलों में बढ़ेगी एकजुटता

उमेश के बंसी
(प्रबंध संपादक)

विधानसभा चुनावों के नतीजों, विशेष तौर पर राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में कांग्रेस की हार के बाद 'इंडिया' ब्लॉक को निशाना बनाया जाने लगा है. कहा जा रहा है कि अब इस महागठबंधन के दिन लद गए हैं और इनमें दरारें आ गई हैं. इसके लिए अखिलेश यादव या ममता बनर्जी या नीतीश कुमार जैसे नेताओं के बयानों या कथनों का इस्तेमाल किया जा रहा है. जबकि, असलियत इसके विपरीत है. कांग्रेस को लेकर सपा अध्यक्ष के पहले के बयानों का उल्लेख करने वाले लोग शायद यह भूल गए हैं कि चुनाव नतीजों के बाद अखिलेश यादव ने यह भी कहा कि हाल के चुनावों के जो परिणाम आए हैं, उनसे विपक्षी गठबंधन और मजबूत होगा, और यह नतीजा भाजपा के लिए परेशानी का विषय होना चाहिए. उनके मुताबिक, जनता बदलाव के लिए इच्छुक है, और मुमकिन है कि 2024 में वह परिवर्तन के लिए वोट करे. इतना ही नहीं, नीतीश कुमार ने भी बयान जारी करके स्पष्ट कर दिया कि वह किसी अन्य कारणवश 6 दिसंबर की 'इंडिया' प्रस्तावित बैठक में शामिल नहीं हो रहे थे, इसका अर्थ यह न लगाया जाए कि इस महागठबंधन में सब कुछ ठीक नहीं है. अलबत्ता, उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि अब विपक्षी नेताओं को आपस में बातचीत तेज कर देनी चाहिए, ताकि इस गठबंधन को और मजबूती दी जा सके.

क्या इन सबसे कहीं भी यह संकेत मिलता है कि ये नेतागण 'इंडिया' ब्लॉक को लेकर उत्साहित नहीं हैं? जाहिर है, एक खास मंशा के तहत 'इंडिया' में दरार का नैरेटिव बनाया जा रहा है, ताकि मतदाताओं को भ्रमित किया जा सके. ऐसे में, विपक्षी नेताओं के सामने चुनौती यह है कि वे किस तरह से इस नैरेटिव का मुकाबला करते हैं और मतदाताओं को अपने पक्ष में बनाए रखने में कामयाब होते हैं?

इसके लिए जाहिर तौर पर कुछ काम करने होंगे. सबसे पहले, विपक्ष के सभी नेतागण जल्द से जल्द बैठक करें और अपनी एकजुटता को कहीं अधिक मजबूती से जनता के सामने रखें. इसके बाद उन सबको जनता के मुद्दों पर कहीं अधिक आक्रामक होकर केंद्र को घेरना होगा. इसके लिए किसानों की आमदनी, रोजगार की समस्या, महंगी होती शिक्षा जैसे मुद्दों पर उनको जनता के बीच जाना चाहिए. अगर वे ऐसा करने में सफल रहे, तो 2024 का रण उनका हो सकता है. इसकी उम्मीद इसलिए भी की जा सकती है, क्योंकि हालिया विधानसभा चुनावों में भी जहां एक प्रदेश में कांग्रेस को जीत मिली है, तो बाकी राज्यों में उसे अच्छा-खासा मत-प्रतिशत हासिल हुआ है. इन सबका फायदा आम चुनाव में हो सकता है.

केले की 99 फसलों को फंगस से खतरा

लंदन. दुनिया भर में खाये जाने वाले केले की प्रजाति को एक फंगस ने अपनी गिरफ्त में ले लिया है. केले के लिए यह फंगस 'महामारी' जैसा है. दुनिया में 99 प्रतिशत केलों की फसलों में फंगस से खतरा है. 20 से अधिक देशों में यह बीमारी फैल गई है. किसान और वैज्ञानिक चितिंत हैं और इस प्रजाति को बचाने के लिए तरह-तरह के उपाय कर रहे हैं.

मनुष्यों में कोरोना की तरह अब फलों में भी एक महामारी जैसा स्वरूप देखने को मिल रहा है. साथ यह भी चिंता है कि कहीं इस खतरनाक फंगस से दुनिया भर में केले का अस्तित्व ही समाप्त न हो जाए.

अचानक फैले फंगस से निबटने के लिए किसान और वैज्ञानिक तमाम उपाय कर रहे हैं. यह फंगस लक्षण दिखने से पहले ही फैल जाता है और पौधे पर लगने के बाद इसे रोकना असंभव है. केले के पत्ते हरे रंग की तुलना में अधिक पीले और किनारे काले पड़ जाते हैं.

शोधकर्ता फर्नांडो गार्सिया ने इस डच कंपनी में जाने से पहले नीदरलैंड में वैगनिंगन विश्वविद्यालय में टीआर 4 का अध्ययन किया था. 950 के दशक में जब पनामा रोग पहली बार आया था, तब उद्योग को सबसे खराब वनस्पति महामारियों में से एक के रूप में वर्णित किया गया था.

17 दिन बाद मौत के मुंह से बाहर निकले सभी 41 श्रमिक

उत्तरकाशी. सिलक्यारा में सुरंग में फंसे 41 श्रमिकों ने जिंदगी की जंग जीत ली. 17 दिनों से सुरंग में फंसे मजदूर लंबी जद्दोजहद के बाद मौत के मुंह से बाहर आ गए. इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रमिकों से बात कर उनका हाल जाना. दिवाली वाले दिन जब देश रोशनी में नहाया हुआ था, तब ये भूस्खलन के कारण अंधेरी सुरंग में फंस गए थे.

मंगलवार दोपहर एक बजे जैसे ही पाइप टनल ने मलबे को पार किया तो उत्सव का माहौल बन गया. इस दौरान सुरंग के भीतर नौ बिस्तरों का अस्थायी अस्पताल भी तैयार कर लिया गया. जैसे ही पहला मजदूर बाहर आया, मुख्यमंत्री धामी ने उसे गले लगा लिया. उन्होंने कहा, निसंदेह आप सभी बहुत बहादुर हैं. आपने हर परिस्थिति का डटकर मुकाबला किया.

श्रमिकों को एक-एक लाख की मदद

इस मौके पर मुख्यमंत्री धामी ने ऐलान किया कि सभी श्रमिकों को आर्थिक सहायता के रूप में एक-एक लाख रुपये दिए जाएंगे. साथ ही निर्माण कंपनी से मजूदरों को स्वास्थ्य लाभ और अपने परिवार के पास जाने के लिए कुछ समय का सवेतन अवकाश देने को कहा.

अंतिम क्षणों में फिर आई बाधा

अभियान के अंतिम क्षणों में मलबे के रूप में एक बार फिर बाधा आने से चार घंटे तक काम रोकना पड़ा. सूत्रों के अनुसार, पाइप टनल बनाने की वजह से वहां दोबारा मलबा आने लगा था. मलबे की सफाई के बाद मजदूरों को पाइप टलन तक लाने के लिए प्लेटफार्म तैयार करना पड़ा. रात करीब सवा सात बजे प्लेटफार्म और पाइप की वेल्डिंग का काम पूरा होने के बाद मजदूरों को बाहर निकाला जाने लगा.

पीएमओ हर पल रख रहा था

नजर इस बचाव अभियान पर पीएमओ लगातार निगाह बनाए हुए था. पीएमओ के अधिकारियों की एक टीम कई दिनों से सिलक्यारा में सुरंग के पास कैंप किए हुए थी. राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य सैयद अता हसनैन ने बताया कि रैट-होल खनिकों ने अभूतपूर्व काम किया. रैट-होल खनन अवैध हो सकता है, लेकिन खनिकों के अनुभव ने काम आसान किया.

जिंदगी के लिए डटकर किया मुकाबला

टनल में कैद मजदूरों ने हर हालात का डटकर सामना किया. श्रमिकों को उम्मीद थी कि वे जल्द से जल्द बाहर निकल जाएंगे लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते गए तो कुछ हौसला टूटा भी. ऐसे में सुरंग के भीतर मौजूद उनके साथी ही उनकी ताकत बने. जब संचार सुविधा बहाल हुई तों श्रमिकों का हौसला फिर मजबूत हो गया.

पहली बार जब कैमरा भीतर गया तो श्रमिकों के चेहरे खिल गए.

डर-सदमे से बचाना जरूरी

देहरादून के कोरोनेशन अस्पताल की मनोचिकित्सक डॉ. निशा सिंघला का कहना है कि इतने दिन टनल में रहने के बाद पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसआर्डर होने की आशंका रहती है. उसी हादसे की याद आती है, डर लगता रहता है, नींद में व्यवधान होता है. ऐसे लक्षण आएं तो मनोचिकित्सक से जरूर मिलें और परामर्श लें. परिजन भी उनके व्यवहार पर नजर रखें.

फॉक्स स्टोरी मैगजीन ने 100 प्रभावशाली भारतीय की सूची में छत्तीसगढ़ के अंकित यादव को दिया पहला स्थान

अंकित यादव, छत्तीसगढ़ और देश में जाना माना नाम है, जिनकी उपलब्धियों का शोर आज दुनिया भर में है

रायपुर. अंकित यादव जो कि भिलाई छत्तीसगढ़ में जन्मे हैं पेशे से एक वेल्थ मैनेजर हैं और देश के बड़े ईकानमिस्ट माने जाते हैं जो मुद्रा नीति में अपनी काफी पकड़ रखते हैं वे 100 प्रभावशाली व्यक्तों की सूची में पहले स्थान पर है. गौरतलब है दुनिया की बड़ी मैगजीन फॉक्स स्टोरी प्रत्येक वर्ष अपनी सूची जारी करती है देश के 100 सबसे बड़े पावरफुल और प्रभावशाली व्यक्तियों के बारे में जानकारी देती है. इस वर्ष 2023 में भी फॉक्स स्टोरी ने अपनी सूची जारी की, जिसमें सबको चौकाते हुए और सबके अनुमान से परे छत्तीसगढ़ की शान अंकित यादव ने पहला स्थान हासिल किया. इतना ही नहीं वो मैगजीन के कवर पेज में भी रहे. फॉक्स ने बताया कि 2023 में 40 से कम उम्र में 100 प्रभावशाली व्यक्तियों में अंकित ने सर्वोच स्थान प्राप्त किया है और वो इस साल देश के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति रहे.

फॉक्स ने यह भी बताया कि अंकित के पहले स्थान में रहने के पीछे की वजह है उनकी सटीक भविष्यवाणी जो की उन्होंने crypto को लेकर साल 2022 मे की थी. जिसकी वजह से देश के बड़े जर्नलिस्ट ने उन्हें सबसे ज्यादा वोट किया और वो पहले स्थान पर रहे,

इसके साथ ही अंकित ने नया कीर्तिमान भी बनाया और वो फ्रंट पेज और छत्तीसगढ़ से पहला स्थान पाने वाले सबसे पहले युवा शख्सियत भी बन गए.

100 प्रभावशाली व्यक्ति की सूची में छत्तीसगढ़ से आने वाले अंकित बने पहले व्यक्ति

अंकित लगातार आसमान की उचाई छू रहे हैं और इसके साथ वो राज्य का नाम भी लहरा रहे हैं. आज अंकित ने पूरे छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित कर दिया है और इस मौके पर उनको बधाईयों का ताता लगा हुआ है. अंकित पूरे छत्तीसगढ़ की शान बन चुके है. ऐसा पहला मौका है जब फॉक्स की सूची मे हमारे छत्तीसगढ़ से कोई है. गौरतलब है कि फॉक्स पिछले 30 सालो से ये सूचीजारी कर रहा है.

वेल्थ इंडेक्स में भी चलता है अंकित का सिक्का, वर्तमान में है राज्य के सबसे धनी व्यक्ति

डीनए ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि अंकित का मार्केट वैल्यूएशन 60 मिलियन के आसपास है और वो छत्तीसगढ़ राज्य के सबसे धनी व्यक्ति भी हैं. रिपोर्ट ने ये भी दावा किया है कि उनका स्टार्टअप छत्तीसगढ़ में सबसे बड़ा रहा है. अंकित मार्केट मेस्ट्रो नाम के स्टार्टअप के फाउंडर भी रहे हैं, जिनकी रीच् 1. 2 करोड़/माह से भी ज्यादा है और कंपनी की मार्किट वैल्यू करोड़ों में है.

छत्तीसगढ़ में टैक्स भरने के मामले में भी अंकित है सबसे आगे

अंकित अपनी छवि को एकदम साफ-पारदर्शी रखने के लिए जाने जाते हैं बिल्कुल अपने गुरु वॉरेन बफेट के जैसे. क्रॉनिकल की रिपोर्ट में बताया गया है कि अंकित यादव लगातर पिछले दो वर्षों से छत्तीसगढ़ राज्य में सबसे ज्यादा इंडिविजुअल टैक्स भर रहे हैं. मध्यम परिवार और छोटे शहर से आने के बावजुद अंकित ने ये मिसाल कायम किया है. शेयर बाजार के गुरु माने जाने वाले अंकित की तरफ आज लाखो युवाओं की नजर बनी हुई है और वो एक सफलता के प्रतीक हैं. अंकित यादव कारो के भारी शौखिन है.

भिलाई में दौड़ती है एक से बढ़कर एक स्पोर्ट्स कार

जिस उम्र में युवा रोजगार तलाश करते दिखाई देते हैं वही अंकितअपनी जिम्मेदारी और जिंदगी को पूरा करते भी दिखाई देते हैं भिलाई में उन्हें कई बार मीडिया हाउस ने एक से बढ़कर एक स्पोर्ट्स कार में देखा गया है. उनके पास ऑडी से लेकर मर्सिडीज तक हर जर्मन कारो का काफिला है, हालांकि उनके मैनेजर ने बताया है कि अंकित अक्सर बाहर रहते हैं ज्यादातार समय वो अपने मुंबई के घर में ही बिताते हैं लेकिन तब भी वो भिलाई आते हैं तो अपनी हर एक कार को जरूर चलाते हैं और टेस्ट करते हैं.

अंकित ने लगा दी है अवॉर्डो की झड़ी, ग्लोबल लेवल पर जीते हैं अवॉर्ड

अंकित ने अपनी कम उम्र में से कुछ नामी अवॉर्ड देश और ''एशिया नोबेल अवॉर्ड इन्फ्लुएन्सिएल इंट्रप्रेन्योर ''सर्वश्रेष्ठ फंड मैनेजर ग्लोबल लीडर, आउटस्टैंडिंग यंग अचीवर्स इन फाइनेंस '' इन बिजनेस'' के खिताब से भी उन्हें कई मीडिया आउटलेट्स ने किया है, जैसे कि सीआईओ और ''100 मोस्ट डायनामिक टाइम्स ऑफ इंडिया, बिजनेस इंसाइडर जैसे प्रमुख लोगो तक पहुंच रहा है.

बहुत सारे अवॉर्ड जीते हैं इनमें विदेशो के भी शामिल है. जिनमे 2022''और ''एशिया मोस्ट अवॉर्ड'', इसके अलावा उन्हें 2023'',''मोस्ट एडमायर्ड अचीवमेंट अवार्ड इन फाइनेंस , और ''मोस्ट सक्सेसफुल मैन नवाजा गया है.साथ ही साथ अपने कवर पेज में शामिल मैगजीन, एक्सीलॉन मैगजीन, लीडर''. उनके ब्लॉग को इकोनॉमिक टाइम्स नाउ, और आउटलेट्स के माध्यम से

कांग्रेस की गारंटियों पर भारी पड़ा ‘मोदी मैजिक’

“नई दिल्ली. अगले आम चुनावों की दृष्टि से अहम माने जाने वाले छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान जैसे हिंदी भाषी राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणामों ने अच्छे-अच्छे सियासी पंडितों के कयासों को धाराशायी कर दिया. मध्यप्रदेश में सत्ता बरकरार रखने के साथ भाजपा ने छत्तीसगढ़ और राजस्थान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मैजिक के सहारे कांग्रेस से सत्ता छीन ली.”

इन चुनावों में कांग्रेस की ‘गारंटियों’ पर मोदी का चेहरा भारी पड़ा. कांग्रेस मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में अति आत्मविश्वास के कारण भाजपा का ‘अंडर करंट’ नहीं समझ पाई. राजस्थान में नजर नहीं आ रही सत्ता विरोधी लहर के बावजूद हर पांच साल बाद सत्ता परिवर्तन का रिवाज कायम रहा.

सत्ता के इस सेमीफाइनल में जीत की गूंज अगले आम चुनाव तक सुनाई दे सकती है. मध्यप्रदेश में पिछली बार सत्ता में आने के बावजूद विधायकों के टूट जाने के बाद सत्ता से बाहर हुई कांग्रेस मतदाताओं की सहानुभूति और शिवराज सिंह चौहान के खिलाफ ‘एंटी इनकम्बेंसी’ पर भरोसा करती रही. उसके अति आत्मविश्वास के कारण भाजपा के सिर पर पिछली बार से बड़ी जीत का सेहरा बांध दिया. छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के ‘ओवर कॉन्फिडेंस’ को मोदी का मारक प्रचार और ‘महादेव ऐप’ ले डूबा. राजस्थान में हार के बाद खुद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने माना कि सरकारी योजनाएं और गारंटियां आम लोगों तक पहुंचाने में नाकाम रहे. जानकार मानते हैं कि गहलोत- पायलट की खींचतान ने ‘गहलोत बनाम मोदी’ की जंग में जयमाला भाजपा को पहना दी.

कुछ मुद्दे चल गए, कुछ में नहीं रहा दम

तीनों राज्यों में मोदी ने आक्रामक प्रचार के दौरान सनातम धर्म, तुष्टिकरण, जातिवाद के मुद्दों को प्रमुखता से रखा तो 'मोदी की गारंटी' को असली बताकर कांग्रेस की गारंटियों वाले हथियार की धार कुंद कर दी. लोगों ने मोदी का गारंटियों पर ज्यादा एतबार किया. कांग्रेस की गारंटियां धरी रह गईं. राम मंदिर निर्माण व सनातन धर्म के मुद्दों से कई जगह सियासी ध्रुवीकरण भी हुआ. कांग्रेस ने कर्मचारियों को साधने के लिए इन राज्यों में भी 'ओपीएस' को मुद्दा बनाया. भाजपा प्रत्याशियों को मिले पोस्टल वोट से लगता है कि यह मुद्दा चला नहीं.

नाकाम रही 'सॉफ्ट हिंदुत्व' की नीति...

विशेषज्ञों के अनुसार कांग्रेस की 'सॉफ्ट हिंदुत्व' की नीति पर सनातन भारी पड़ता नजर आया. सनातन के नाम पर भाजपा हिंदुत्व का कार्ड खेलने में कामयाब हो गई. आम चुनाव में भी भाजपा के सनातन के मुद्दे से कांग्रेस को चुनौती मिल सकती है.

भूपेश-गहलोत ने सीएम पद से दिया इस्तीफा

रायपुर. विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली हार के बाद मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रविवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया. बघेल ने राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन को अपना इस्तीफा सौंप दिया. वहीं गहलोत ने राज्यपाल कलराज मिश्र को अपना त्याग-पत्र सौंपा. राज्यपाल हरिचंदन ने इस्तीफा तत्काल प्रभाव से स्वीकार करते हुए बघेल से राज्य में नई सरकार के गठन होने तक कार्य करते रहने का आग्रह किया.

चीन के वायरस से फिलहाल हमें कितना डरना चाहिए

"चार साल पहले यही मौसम था, सर्दी की शुरुआत ही हुई थी, जब चीन से कोरोना वायरस की लहर उठी और देखते-देखते पूरी दुनिया उसकी घातक चपेट में आ गई थी. इस साल फिर वहां एक वायरस के प्रसार की सूचनाएं मिल रही हैं और यह वायरस भी इंसान, विशेषकर बच्चों के श्वसन-तंत्र पर हमला कर रहा है."

लिहाजा, चीन में फैल रही माइकोप्लाज्मा निमोनिया और इन्फ्लूएंजा (फ्लू) को लेकर दुनिया भर में स्वाभाविक चिंता देखी जा रही है. हालांकि, यह कोई नया वायरस नहीं है और इसे फिलहाल वहां भी नियंत्रण में बताया जा रहा है, लेकिन इसके मरीजों की संख्या काफी तेजी से बढ़ रही है. इसीलिए, भारत सरकार ने भी अपने यहां सुरक्षा को लेकर तमाम तरह के दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं. राज्य सरकारों और अस्पतालों को निमोनिया के मरीजों की खास निगरानी करने और जरूरी एहतियाती उपाय अपनाने को कहा गया है.

सवाल यह है कि इस इन्फ्लूएंजा और कोरोना वायरस में कितनी समानता है? निश्चित तौर पर, ये दोनों ही वायरस काफी तेजी से फैलते हैं और दोनों के पास महामारी पैदा करने की पर्याप्त क्षमता है. फिर भी, दोनों एक-दूसरे से अलग प्रकृति के वायरस हैं. दरअसल, चीन में जिस एच9एन2 वायरस की वजह से इन्फ्लूएंजा फैला है, उसकी कई लहर आ चुकी है, और यह ऐसे ही आती रहेगी, क्योंकि इसका रूप बड़ी तेजी से बदलता है. किसी भी वायरस के रूप में बदलाव वास्तव में दो तरह से होता है, जिसे तकनीकी शब्दावली में 'ड्रिफ्ट' और 'शिफ्ट' कहते हैं. ड्रिफ्ट का मतलब होता है वायरस के जीन में मामूली बदलाव, जिसमें सतह के प्रोटीन में भी कुछ हद तक बदलाव होते हैं, जबकि शिफ्ट में अचानक इतना बड़ा बदलाव होता है कि उससे वायरस में नया प्रोटीन बन जाता है. चूंकि इसमें प्रोटीन नया होता है, इसलिए शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली उसको पकड़ने में सफल नहीं हो पाती.

एच9एन2 वक्त के साथ नए-नए रूप लेता रहता है, जिसके कारण कमोबेश एक नियमित अंतराल पर मानव आबादी इसकी चपेट में आती रहती है. यही वजह है कि एच9एन2 वायरस पर 2019 के बाद से हरसंभव निगाह रखी जा रही है.

अभी इस बीमारी के फैलने की एक और वजह है. इन्फ्लूएंजा आमतौर पर सर्दी के मौसम में ही फैलता है. अभी चीन में तेज सर्दी पड़ रही है और कोरोना के समय लगाए गए प्रतिबंध भी हटा लिए गए हैं. इसके मरीज उन इलाकों या शहरों में अधिक आ रहे हैं, जो काफी उन्नत है और जहां पर जनसंख्या घनत्व ज्यादा है. चूंकि बच्चे एक-दूसरे के संपर्क में अधिक रहते हैं, इसलिए उनमें इस निमोनिया का प्रसार काफी ज्यादा हो रहा है. फिलहाल राहत की बात यह है कि वहां मौत की खबरें कम हैं.

वैसे भी, इन्फ्लूएंजा वायरस या बीमारी बुजुर्गों में अधिक घातक होती है. इसका इलाज आमतौर पर वही है, जो अन्य इन्फ्लूएंजा का है और लक्षण भी समान रूप से सर्दी-जुकाम ही हैं. बीमारी के लक्षण को देखकर ही इसका उपचार किया जाता है. इन्फ्लूएंजा वायरस चूंकि नियमित तौर पर दुनिया भर में फैलता रहा है, इसलिए भारत भी इससे अछूता नहीं रहा है. संभवत यह नया वायरस भी यहां आ सकता है. बस दिक्कत यह है कि इसका पता जब तक चल पाता है, तब तक काफी देर हो चुकी होती है और इसका चारों ओर संक्रमण फैल चुका होता है. चीन में भी अस्पताल हांफने लगे हैं, क्योंकि उन पर अचानक मरीजों का बोझ आ गया है.

भारत सरकार ने स्वाभाविक ही इस संदर्भ में दिशा-निर्देश जारी किए हैं. यह एक सराहनीय पहल है. इस दिशा-निर्देश में पूर्व-तैयारी की चर्चा है. अच्छी बात यह है कि कोविड के कारण ये चीजें काफी हद तक काम करने लगी हैं. वैसे, अपने यहां खतरा उन इलाकों में ज्यादा है, जहां पर बाहर से लोग आते हैं. खासकर महानगरों से इस वायरस का प्रसार हो सकता है. हालांकि, सुखद बात यह है कि अब तक ऐसा कोई उभार देखने को नहीं मिला है. बहुत मुमकिन है कि यह दिखे भी नहीं, क्योंकि यह वायरस अलग-अलग देशों में अलग-अलग रूप अख्तियार करता है. फिर भी, हमें सावधान रहना होगा और इस पर नजर बनाए रखनी होगी. किसी किस्म की अफरा-तफरी से बचने का यही मुफीद रास्ता है.

कुंडली में चंद्रमा के बारह भावों में क्या फल होते हैं?

प्रथम भाव

चंद्रमा कारक हो तो व्यक्ति आकर्षक होगा. धनी और दीर्घायु होगा. चंद्रमा मारक या नीच हो तो व्यक्ति गूंगा, बहरा, अंधा, पागल या जड़ बुद्धि हो सकता है. डिप्रेशन का शिकार भी हो सकता है.

दूसरा भाव

चंद्रमा कारक या उच्च का है तो व्यक्ति धनवान होगा. कलाकार भी हो सकता है. ऐसा व्यक्ति अपने कुटुंब के लिए बहुत भाग्यशाली होगा. द्वितीय भाव में चंद्रमा मारक है तो व्यक्ति की वाणी कठोर होगी. व्यक्ति भोग-विलासी हो सकता है.

तीसरा भाव

कारक चंद्रमा व्यक्ति को भाइयों का सुख देगा. बहादुर लेकिन कंजूस होगा. स्मरणशक्ति अच्छी होगी. चंद्रमा मारक हो तो भाइयों से कोई सहायता नहीं मिलती.

चतुर्थ भाव

चंद्रमा कारक है तो व्यक्ति सुखी होगा. माता का बहुत प्रेमी होगा. चंद्रमा मारक हो तो माता को बीमारी होगी. भवन या वाहन सुख में कमी रहेगी.

पंचम भाव

चंद्रमा कारक है तो व्यक्ति धनवान होगा. संतान सुख, मधुर भाषी होगा. चंद्रमा मारक है तो असफल प्रेम संबंध होंगे. संतान सुख में कमी. पेट का रोगी होगा.

छठा भाव

ऐसे व्यक्ति की पाचन शक्ति में दिक्कत होगी. मंदबुद्धि होगा. व्यवसाय में अड़चन और कानूनी मामलों में भी दिक्कत होगी.

सप्तम भाव

चंद्रमा कारक हो तो व्यक्ति व्यापार में बहुत लाभ कमाएगा. अगर चंद्रमा मारक है तो स्त्री सुख में कमी रहेगी. पार्टनरशिप में धोखा मिलेगा. ऐसा व्यक्ति वाद-विवाद में सफल हो सकता है.

अष्टम भाव

चंद्रमा कारक है तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, रोगी, अल्पायु होगा. ऐसा जातक झूठ बोलने में बिलकुल नहीं झिझकेगा.

नवम भाव

कारक चंद्रमा पिता-पुत्र के संबंध अच्छा रखेगा. व्यक्ति चतुर, पराक्रमी, भाग्यवान होगा. चंद्रमा मारक है तो व्यक्ति के भाग्य में रुकावट आएगी. पिता से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे.

दशम भाव

चंद्रमा कारक है तो व्यक्ति धनी, बुद्धिमान होगा. ऐसा व्यक्ति राज्य में ऊंचे पद पर रहेगा. चंद्रमा मारक है तो व्यक्ति को काम-धंधे में सफलता नहीं मिलेगी.

एकादश भाव

चंद्रमा कारक है तो व्यक्ति दीर्घायु होगा. उसके घर में नौकर-चाकर रहेंगे. चंद्रमा मारक है तो अभावों से ग्रस्त रहेगा.

द्वादश भाव

चंद्रमा होने से व्यक्ति क्रूर, शेखीबाज, दुखी, क्रोधी व धोखेबाज होगा. चंद्रमा नीच का होकर बैठे तो व्यक्ति खूब रिश्वत लेता है. जेल योग भी बन सकता है.

वंदे भारत ट्रेन में महाराजा एक्सप्रेस जैसी सुविधाएं

नई दिल्ली. प्रीमियम ट्रेन वंदे भारत एक्सप्रेस में शाही ट्रेनों पैलेस ऑन व्हील और महाराजा एक्सप्रेस की तरह यात्री सुविधाएं शुरू की जा रही हैं. इसके तहत हाउस कीपिंग, कैटरिंग, पेयपदार्थ, यात्रा संबंधी सामग्री मिलेगी. साथ ही एक समर्पित सहायक ट्रेन में सवार होते और उतरते समय यात्रियों की सेवा में हाजिर रहेगा.

वंदे भारत में यात्री सेवा की कमान राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर की पेशेवर कंपनी को सौंपी जाएगी. इस बाबत रेलवे बोर्ड ने 23 नंवबर को सिर्फ वंदे भारत ट्रेनों के लिए समर्पित नई नीति यात्री सेवा अनुबंध (वाईएसए) को जारी किया है. इसमें दक्षिण भारत में चल रही चेन्नई-तिरुनेलवेली, चेन्नई-कोयम्बटूर, चेन्नई-मैसूर, तिरुवनंतपुरम-कासरगोड, चेन्नई-विजयवाड़ा सहित छह जोड़ी (12 वंदे भारत ट्रेन) वंदे भारत ट्रेनों में पायलट प्रोजेक्ट के तहत वाईएसए शुरू की जाएगी. इसके पश्चात सभी वंदे भारत में इसे लागू किया जाएगा.

ये सेवाएं मुफ्त मिलेंगी

वंदे भारत में यात्रियों को अतिरिक्त सुविधाएं मुफ्त में मिलेगी. इसके लिए रेलवे की ओर से पेशेवर कैटरिंग कंपनियों को कोच में विज्ञापन का अधिकार दिया जाएगा. इसके अलावा कैटरिंग, पेयपदार्थ, ऑफ बोर्ड यात्री सेवाएं के जरिए कमाई कर सकेंगे.

सुझाव लिए जाएंगे

यात्रियों से वाईएसए एप, रेल मदद एप पर फीडबैक लिया जाएगा. इसके 70 फीसदी अंक होंगे. थर्ड पार्टी के ऑडिट के 20 व भारतीय रेल के निरीक्षण के 10 फीसदी अंक जुड़ेंगे.

चलती ट्रेन में ही समस्या का समाधान किया जाएगा

वंदे भारत में कंपनी का एक पेशेवर सहायक तैनात होगा, जो यात्रियों की समस्याएं दूर करेगा. इसमें सूचना व मनोरंजन, टॉयलेट में पानी, मोबाइल चार्जिंग में खराबी आदि का चलती ट्रेन में समाधान किया जाएगा. अभी यह व्यवस्था शाही ट्रेन पैलेस ऑन व्हील और महाराजा एक्सप्रेस में है.

आपको भी पसंद आएंगी जापान की ये तकनीकें

अच्छी सेहत और खुशियां बढ़ाने के लिए इन दिनों जापानी दर्शन और आदतों को दुनियाभर में पसंद किया जा रहा है. लंबी उम्र तक स्वस्थ रहना है या आलस भगाना है, हीन विचारों से दूर रहना है या फिर भोजन के साथ अच्छा रिश्ता बनाना है, आपके जीवन को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं ये तकनीकें. मोटिवेशन गुरुओं को भा रही जापानी लोगों की इन आदतों को आप भी आजमाकर देखिए.

क्या है आपका 'इकिगाई'

मोटिवेशनल किताबों की दुनिया में हेक्टर ग्रार्सिया और फ्रान्सेस्क की बेस्ट सेलर किताब इकिगाई को काफी पसंद किया जा रहा है. इकिगाई से आशय है जीवन में मकसद का होना. मकसद जो हर सुबह बिस्तर से उठने की प्रेरणा देता है. उद्देश्य, जो जीवन और हमारे कामों को उपयोगी बनाता है. जापान में मानते हैं कि हमारे काम और जीवन का उद्देश्य जितना आपस में जुड़े होते हैं, उतनी ही हमारी खुशी और संतुष्टि बढ़ जाती है. उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने वाले लंबा और खुशहाल जीवन जीते हैं. लेखक हेक्टर, इकिगाई के चार नियम बताते हैं-

- वह करें, जो आपको पसंद है.
- वह करें, जिसमें आप कुशल हैं.
- वह करें, जिसकी दुनिया को जरूरत है.
- वह करें, जिसके लिए आपको भुगतान किया जा सकता है.

ये चारों जितने एक दूसरे से जुड़े होते हैं, उतनी ही खुशी बढ़ जाती है. इस तरह हर व्यक्ति का अपना इकिगाई होता है. तो क्या आप अपना इकिगाई जानते हैं?

संतुलित जीवन का तरीका 'नागोमी'

नागोमी यानी संतुलन. जीवन के तमाम उतार-चढ़ाव को स्वीकार करते हुए उनका सामना करने की शक्ति. बात खाने में खट्टा, मीठा, नमकीन आदि हर स्वाद को शामिल करने की हो या फिर सर्दी, गर्मी, पतझड़, बसंत हर मौसम को खुशी से स्वीकारने की, नागोमी संतुलन से जीने की जापानी विचारधारा है. सामान्य शब्दों में यह तन-मन की शांति, संतुलन और सुकून का नाम है. जापानी वैज्ञानिक और 'द वे ऑफ नागोमी' किताब के लेखक इसे जीवन के हर अच्छे-बुरे घटक के साथ तालमेल बनाने का तरीका मानते हैं, जिसकी आज सबको जरूरत है. केन कहते हैं, 'जापानी लोग ज्यादा जीते हैं, उन्हें सफलता अच्छी लगती है, पर वे जमीन से जुड़ा रहना भी जानते हैं, यही नागोमी की ताकत है. बात अपनी प्रकृति और परिवेश से जुड़ने की हो या फिर दूसरों से अपने संवाद को बेहतर बनाने की, निमोगी को जीवन के हर क्षेत्र पर लागू किया जा सकता है.

- असहमत होने के बावजूद, अपनो संग
- अच्छे रिश्ते बनाने की कोशिश करना.
- खुद को स्वीकारते हुए नई चीजें सीखते रहना.
- जो भी करें उसमें संतुष्टि ढूंढ़ना.
- विविधता को स्वीकारते हुए उससे जुड़ने की कोशिश करना

काइजेन

बिजनेस और लीडरशिप कोच के पसंदीदा शब्दों में शुमार है काइजेन. काई (बदलाव) और जेन (अच्छा) यानी बेहतरी के लिए बदलाव. यह निरंतर सुधार की यात्रा है. हर दिन थोड़ा-थोड़ा सुधार करते हुए आगे बढ़ना. यह बेहतर होने की प्रक्रिया है. यह व्यवसाय व कार्यस्थलों पर उस दर्शन की तरह है, जिसमें छोटी-बड़ी हर इकाई को जोड़ते हुए लगातार काम व संचालन को बेहतर बनाने में जोर दिया जाता है. इसे काम के दौरान सुस्ती व आलस्य से दूर रहने की कला भी कहा जाता है. लेखक विलियम वांग इसे छोटे-छोटे कदमों से लंबी यात्रा तय करने की कला मानते हैं. जिससे काम भी ढंग से पूरे होते हैं और हमारी प्रबंधन क्षमता भी बढ़ती है.

- काम को छोटे-छोटे पड़ावों में बांटना. व्यक्तिगत अनुशासन का ध्यान रखना.
- मनोबल ऊंचा रखते हुए हर दिन थोड़ा सुधार करना.
- नतीजों की जल्दबाजी की जगह प्रक्रिया को बेहतर बनाना.
- पुराने तरीकों पर सवाल उठाना, अपनी सोच या काम करने के तरीके तक सीमित न रहते हुए नए तरीके खोजना.
- काम से जुड़े लोगों में टीम भावना बढ़ाना,उन्हें अपने सुझाव देने के लिए प्रेरित करना.

हारा हाची बू

यह एक तरह से जापानियों की डाइट तकनीक है. हारा हाची बू का आशय है कि 80 प्रतिशत तक पेट भरने के बाद रुक जाना. यह जापान के कई क्षेत्रों विशेषकर ओकिनावा में खाना खाने से जुड़ी पुरानी प्रथा है, जिसके अनुसार पेट को 20 प्रतिशत खाली रखने पर भोजन जल्दी पचता है, सुस्ती दूर रहती है और मन में नकारात्मक भावनाएं कम उत्पन्न होती हैं. यह वजन कम करने और चुस्त रहने में भी उपयोगी है. इसके लिए कुछ बातें जो अपनाई जा सकती हैं, वे हैं-

- भोजन को धीरे धीरे खाएं. शरीर को भोजन ग्रहण करने का समय दें.
- भोजन करते समय केवल खाने पर ध्यान दें. टीवी व मोबाइल आदि न देखें.
- कैलोरी सीमित रखने के लिए छोटे बर्तनों में चीजें लें. धीरे-धीरे भोजन की मात्रा कम करें.
- शांत मन से प्रसन्नता के साथ भोजन करें.

ओलंपिक के लिए 'गाबा' को 150 अरब में मिलेगा नया रूप

सिडनी. 'गाबा' के नाम से मशहूर करीब सवा सौ साल पुराने ब्रिस्बेन क्रिकेट मैदान को अब नया रूप दिया जाएगा. इसके साथ ही इसकी दर्शक क्षमता भी बढ़ाकर 50 हजार कर दी जाएगी. इसके अलावा ओलंपिक 2032 को देखते हुए और भी बदलाव किए जाएंगे.

अंडरग्राउंड रेलवे स्टेशन होगा

नई योजना के अनुसार इसके नीचे एक अंडरग्राउंड रेलवे स्टेशन भी बनाया जाएगा. इसे तोड़कर इसका पुनर्निर्माण किया जाएगा. यह क्रिकेट स्टेडियम 2032 ओलंपिक का मुख्य केंद्र होगा. क्वींसलैंड के उपप्रधानमंत्री स्टीवन माइल्स ने शुक्रवार को पुष्टि की कि इसे तोड़कर दोबारा बनाने में करीब 2.7 बिलियन आस्ट्रेलियन डॉलर (1.8 बिलियन डॉलर) यानी करीब 150 अरब रुपये खर्च होंगे. इसके लिए सरकार ने प्रोजेक्ट सत्यापन रिपोर्ट स्वीकार कर ली है.

देश का तीसरा शहर

माइल्स ने कहा कि इस योजना में करीब एक दशक से भी ज्यादा देश की क्रिकेट गतिविधियों का केंद्र रहे इस मैदान की क्षमता को भी बढ़ाकर 50 हजार तक किया जाना है. इसकी क्षमता बढ़ाने के लिए एक प्राइमरी स्कूल को भी हटाया जाएगा. ब्रिस्बेन को 2021 में ओलंपिक की मेजबानी के लिए चुना गया था. यह ओलंपिक की मेजबानी वाला तीसरा देश का शहर बना था. इससे पहले 1956 में मेलबर्न और 2000 में सिडनी में भी ओलंपिक खेलों का आयोजन हो चुका है.

गाबा का सफर

निर्माण 1895

क्षमता 36 हजार

पहला टेस्ट 27 नवंबर से 3 दिसंबर 1931 तक आस्ट्रेलिया-दक्षिण अफ्रीका के बीच

आखिरी टेस्ट 17-18 दिसंबर 2022 आस्ट्रेलिया और अफ्रीका के बीच खेला गया.

कई क्लब भी हटेंगे

जिस अवधि में स्टेडियम का पुनर्निर्माण किया जाएगा, उतने समय तक क्रिकेट टीम के साथ ही आस्ट्रेलियन फुटबॉल लीग के एक क्लब ब्रिस्बेन लॉयंस को भी अस्थायी रूप से यहां से हटा दिया जाएगा. माइल्स ने कहा कि इसे नया रूप देने में करीब चार साल का वक्त लगेगा. 2025 में इंग्लैंड के खिलाफ एशेज सीरीज की मेजबानी के बाद से गाबा मे काम शुरू होगा जो करीब 2030 तक पूरा हो सकेगा.

66 हजार की लीड से जीते ओपी चौधरी

मुख्यमंत्री पद को लेकर उन्होंने कहा कि मैं बहुत छोटा कार्यकर्ता हूं, मुझसे ऐसे बड़े-बड़े सवाल ना पूछें. मुझसे पहले कई बड़े नेता हैं. मैं एक छोटा सा कार्यकर्ता हूं. बता दें कि ये वहीं ओपी चौधरी हैं जिनके रोड शो में केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने जनता से कहा था कि आप ओपी को विधायक बनाइए, इसको बड़ा आदमी बनाने की जिम्मेदारी मेरी.

प्रदेश में बीजेपी ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है. 55 सीटों के साथ बीजेपी प्रदेश में एक बार फिर से सरकार बनाने की स्थिति में है. बीजेपी ने जितने पूर्व मंत्रियों को मैदान में उतारा था, उनमें से लगभग सभी प्रत्याशियों ने जीत दर्ज की है. यानी भाजपा का ये दाव कारगर साबित हुआ है.

"रायपुर. रायगढ़ विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी ओपी चौधरी 66 हजार वोट से जीत गए हैं. जीत के बाद ओपी चौधरी ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि इस जीत के लिए मैं रायगढ़ की जनता को धन्यवाद देता हूं. ये सबके आशीर्वाद से संभव हुआ है. रायगढ़ की जनता, प्रदेश और केंद्रीय नेतृत्व और हमारे कार्यकर्ताओं ने ये चुनाव जीताया है. इसके लिए मैं रायगढ़ की जनता के लिए जितना भी करूं फिर भी उनका ये ऋण नहीं चुका पाउंगा."

‘राजस्थान में रिवाज बदलने का ख्वाब अधूरा रह गया और राज बदलने का नारा साकार हो गया. विधानसभा चुनाव के नतीजों का विश्लेषण करें तो कांग्रेस की हार के कारणों पर नजर डालना जरूरी हो जाता है. सवाल यह कि कांग्रेस की तमाम गारंटियों को मतदाताओं ने सिरे से नकार दिया. कह सकते हैं कि अशोक गहलोत की ‘जादूगरी’ पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जादू भारी पड़ गया.’

काम नहीं आ सकी गारंटियां, ले डूबे पेपर लीक जैसे मुद्दे

राजस्थान विधानसभा चुनाव 2023 के परिणाम आने के बाद फिर से एक बार भाजपा और एक बार कांग्रेस को सत्ता मिलने का सिलसिला जारी रहा. पुरानी योजनाओं के साथ नई सात कल्याणकारी योजनाओं की गारंटी पर भी मोदी की गारंटी भारी पड़ी. कांग्रेस के ज्यादातर मंत्री भी चुनाव हार गए.

हार के कारणों का मंथन कांग्रेस ने शुरू किया है, लेकिन कांग्रेस की हार का बड़ा कारण ज्यादातर मौजूदा विधायकों को ही जिताऊ बताकर टिकट रिपीट करना भी रहा है. इसके साथ ही कांग्रेस सरकार के मंत्रियों के प्रति जनता की नाराजगी भारी पड़ी. सरकार बचाने में मदद करने वाले विधायकों को टिकट दिलाते समय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इस बात पर गौर नहीं कर पाए कि जनता में मंत्री और विधायकों को लेकर कितनी नाराजगी थी. हालांकि 2013 की तुलना में कांग्रेस का प्रदर्शन बेहतर रहा है. 2018 में चुनाव होने के बाद जब कांग्रेस सत्ता में आई थी, तब से ही मुख्यमंत्री की कुर्सी को लेकर संघर्ष शुरू हो गया. यह संघर्ष पूरे पांच साल चला.

ऐसा समय भी आया जब विधायक दो गुटों में बंटकर होटलों में कैद रहे. बाड़ेबंदी के दौरान मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए कई तरह से राजनीतिक खेल चले. मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट के बीच हुए विवाद के चलते पार्टी कार्यकर्ताओं में नकारात्मक संदेश गया. कांग्रेस को उम्मीद थी कि पुरानी पेंशन योजना लागू करने और सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं के बल पर सत्ता में वापसी हो जाएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

राज्य के सभी नेताओं को साधते हुए सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ा और टिकट वितरण में सभी का ध्यान रखा गया. इससे भाजपा में संतुलन बना रहा. दूसरी ओर, कांग्रेस में चुनाव से ठीक पहले गहलोत और पायलट गुट ने एक-दूसरे पर जुबानी हमले बंद तो कर दिए, पर कार्यकर्ता अंत तक बंटे रहे. इसके साथ ही कांग्रेस की ओर से टिकट वितरण प्रक्रिया के तहत कराए गए सर्वे भी खरे नहीं उतरे. पार्टी ने फीडबैक में हारने की संभावना वाले विधायक और पहले चुनाव हार चुके नेताओं के टिकट काटने के बजाय उन्हें फिर से मैदान में उतार दिया. कई जगह कांग्रेस भितरघात जैसे हालात से भी नहीं बच पाई.

भाजपा, कांग्रेस के खिलाफ माहौल बनाने में सफल रही. कांग्रेस सरकार की विफलताओं को लेकर भाजपा का आक्रामक प्रचार भी कांग्रेस के प्रचार अभियान पर भारी पड़ा. भाजपा ने कांग्रेस पर कानून व्यवस्था में विफल होने और तुष्टीकरण का आरोप लगाते हुए मतों के ध्रुवीकरण के लिए अभियान चलाया. इसके साथ ही भाजपा ने किसी एक नेता के हाथ में पूरी कमान नहीं दी.

हार के बड़े कारण

- टिकट वितरण के दौरान प्रत्याशियों के चयन में अपने गुट के विधायकों को टिकट दिलाने की होड़.
- महिलाओं से जुड़े अपराध बढ़ने से पूरे प्रदेश में सरकार के खिलाफ माहौल बना.
- तुष्टीकरण के मुद्दे को भाजपा ने प्रभावी ढंग से उठाया.
- भर्ती परीक्षाओं के बार-बार पेपर लीक होने के कारण युवाओं में निराशा थी.
- विधायकों की मनमानी.

अति आत्मविश्वास के कारण टूट गया कांग्रेस का सपना

रायपुर. विधानसभा चुनाव परिणाम खासकर कांग्रेस के लिए अप्रत्याशित रहे. कांग्रेस यह मानकर चल रही थी कि जनादेश उसे ही मिलेगा. भाजपा पूरी रणनीति के साथ काम कर रही थी, परिस्थितियां देखकर भाजपा ने रणनीति भी बदली लेकिन अति आत्मविश्वास से भरी कांग्रेस ने रणनीति में कोई बदलाव नहीं किया. जब-जब रणनीति बदलने की बात कही गई तब यही जवाब मिला, हम जीत रहे हैं, जनता हमारे साथ है.

सूबे का हर वर्ग सरकार से नाराज है. कांग्रेस बातें तो करती रही लेकिन इसके लिए कोई ठोस रणनीति नहीं तैयार की गई, जबकि दूसरी ओर भाजपा ने समय काल परिस्थितियों के अनुसार रणनीति बदली. पीएम नरेन्द्र मोदी, अमित शाह सहित अन्य केन्द्रीय मंत्री, पार्टी के दिग्गज नेताओं की ताबड़तोड़ जनसभाएं हुईं, रोड-शो हुए, लेकिन कांग्रेस सिर्फ पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, प्रियंका गांधी, राहुल गांधी और कमलनाथ के भरोसे रही. हालांकि कांग्रेस के स्टार प्रचारकों की सूची में कई दिग्गज नेता शामिल रहे, लेकिन वे चुनाव प्रचार करने यहां नहीं आए. आखिरकार परिणाम सामने है, कांग्रेस को इस चुनाव में तगड़ा झटका लगा. कांग्रेस ने गलतियों से सबक नहीं लिया तो पार्टी को इसका खमियाजा भुगतना होगा.

उम्मीदवारों के चयन में कांग्रेस में खींचतान अधिक रही. भाजपा से आए नेताओं को टिकट का वादा किया गया लेकिन कांग्रेस ने वादा पूरा नहीं किया. आखिरकार कार्यकर्ताओं की नाराजगी का सामना पार्टी को करना पड़ा. टिकट वितरण को लेकर पार्टी में कलह भी सामने आई. कार्यकर्ताओं में नाराजगी रही लेकिन इन्हें मनाने का कोई ठोस प्रयास नहीं हुआ. पिछोर से विधायक केपी सिंह को शिवपुरी से टिकट दिया गया. दावा किया इससे ज्योतिरादित्य सिंधिया की घेराबंदी हो सकेगी. इस सीट पर भाजपा से आए विधायक वीरेन्द्र रघुवंशी दावेदार थे, लेकिन उन्हें टिकट नहीं मिला. आखिरकार केपी सिंह शिवपुरी से चुनाव हार गए. भाजपा ने जब दूसरी सूची में केन्द्रीय मंत्रियों, सांसदों को मैदान में उतारकर यह बताने का प्रयास किया कि यह चुनाव हम किसी भी हालत में जीतना चाहते हैं, इसके बावजूद भी कांग्रेस ने कोई मंथन नहीं किया. जब चुनाव प्रचार के अंतिम दिनों में भाजपा ने पूरी ताकत झोंक दी, उसके मुकाबले कांग्रेस नेता सिर्फ बयानों तक सीमित रहे. राहुल, प्रियंका, खरगे की कुछ सभाएं जरूर हुई, लेकिन यह भाजपा के मुकाबले नाकाफी थीं. पूरे चुनाव के दौरान कांग्रेस कमलनाथ के भरोसे रही. पार्टी में युवाओं को आगे आने का मौका नहीं मिला. दूसरी पंक्ति तैयार नहीं होने से एक बड़ा गैप दिखा. भाजपा की रणनीति को हल्के में लिया गया. यहीं नहीं भाजपा की कमजोरियों को भी पार्टी नहीं भुना पाई. भाजपा सरकार में हुए घोटाले, भ्रष्टाचार पर घेराबंदी की बात तो हुई, पम्पलेट, बुकलेट, पोस्टर तो छपे लेकिन पार्टी कोई बड़ा कैंपेन खड़ा नहीं कर पाई.

मध्यप्रदेश में बसपा, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी का गठबंधन हुआ. दोनों दल एक साथ चुनाव मैदान में उतरे. वहीं आदिवासी संगठन जयस एवं भीम आर्मी जैसे संगठनों को पार्टी ने अनदेखा किया. इन्हें साधने की बजाय, पार्टी यही मानकर चलती रही कि फैसला कांग्रेस के पक्ष में आएगा. इंडिया गठबंधन के साथ सपा से विधानसभा चुनाव के दौरान अनबन दिखी. सपा ने गठबंधन के तहत कुछ सीटें मांगी तो कांग्रेस ने इनकार कर दिया. कमलनाथ के एक बयान ने सपा सुप्रीमो अखिलेश का पारा बढ़ा दिया. चुनाव तक अखिलेश की नाराजगी रही. कांग्रेस को इसका नुकसान भी हुआ. कांग्रेस ने आमजन को ढेर सारे वचन तो दिए, लेकिन कांग्रेस इन वचनों का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकी. जन-जन तक इस तरह के वादों को पहुंचाने में कांग्रेस नाकामयाब रही. दूसरी तरफ भाजपा जनता तक अपनी बात पहुंचाने में सफल रही.

मोदी की गारंटी को महतारियों का वंदन

रायपुर. प्रदेश में भाजपा का स्पष्ट बहुमत से सरकार बनाने का मुख्य कारण पीएम नरेन्द्र मोदी की गारंटी पर प्रदेश की जनता ने मुहर लगाई है. अब प्रदेश में भाजपा की विकास की कहानी लिखने की बारी है. सबसे ज्यादा प्रभावशाली महतारी वंदन योजना रही है. इस योजना से ही प्रदेश की महिलाओं ने करीब 50 सीटों पर बंपर वोटिंग की थी. किसानों ने धान का एकमुश्त भुगतान और दो साल का बोनस एक साथ मिलने पर भाजपा के पक्ष में वोट किया. इसके अलावा गरीब परिवारों के वोटरों ने 500 रु. में गैस सिलेंडर मिलने पर और तीर्थ यात्रा की बाट जोह रहे प्रदेश के बुजुर्ग वोटरों ने अयोध्या में श्रीराम लला के दर्शन करने के लिए भाजपा को अपना वोट दिया. युवा वर्ग को साधने के लिए भाजपा ने पीएससी और प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़ी का मुद्दा उठाया. अधिकारियों-कर्मचारियों की समस्याओं के निराकरण के लिए 100 दिन के अंदर समिति बनाने का वादा किया था. इसलिए अधिकारी-कर्मचारी भी भाजपा को वोटिंग की.

इसके साथ ही भाजपा द्वारा दंतेवाड़ा और जशपुर से परिवर्तन यात्रा से पूरा चुनावी माहौल बदल गया. परिवर्तन यात्रा के दौरान जन-जन तक एक ही नारा अऊ नई सहिबो बदल के रहिबो नारा पहुंचाना. इसके अलावा भाजपा आवत है के नारा भी प्रदेश की जनता के मन में बिठाना. कुल मिलाकर भाजपा ने हर मोर्चों पर कांग्रेस सरकार घेरा और लोगों को अहसास कराया कांग्रेस सरकार को सत्ता से बाहर करने में ही प्रदेश की भलाई है. इसके अलावा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, प्रदेश प्रभारी ओम माथुर, चुनाव सह प्रभारी डॉ. मनसुख मंडाविया, सह प्रभारी नितिन नवीन की सियासी रणनीति भी चुनाव जीतने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

छत्तीसगढ़ विधानसभा में 18 महिला प्रत्याशी संभालेंगी मोर्चा

रायपुर. छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव के लिए दो चरणों में हुए मतदान की वोटों की गिनती आज हो रही है. इस बार विधानसभा चुनाव में 90 सीटों में से कई सीटों पर भाजपा-कांग्रेस ने कई महिला प्रत्याशियों को मैदान में उतारा हैं. इसमें भाजपा के 15 तो वहीं कांग्रेस के 18 महिला कैंडिडेट शामिल है. आइए जानते हैं कौन सी महिला प्रत्याशियों ने मारी बाजी और किसे हार मिली है. इस बार छत्तीसगढ़ विधानसभा में 18 महिला प्रत्याशी मोर्चा संभालेंगी. कांग्रेस ने 18 महिला प्रत्याशियों को मौका दिया था, जिसमें से 10 महिला कैंडिडेट को जीत मिली है. वहीं, भाजपा ने 15 महिला प्रत्याशियों को मौका दिया था, जिसमें से 8 महिला कैंडिडेट को जीत मिली है.

भाजपा महिला प्रत्याशियों में कौन जीता कौन हारा

- **भरतपुर-सोनहत** - रेणुका सिंह ने जीता चुनाव
- **सामरी** - उद्धेश्वरी पैकरा ने जीता चुनाव
- **जशपुर** - रायमुनि भगत ने जीता चुनाव
- **पत्थलगांव** - गोमती साय ने जीता चुनाव
- **लैलूंगा** - सुनीति सत्यानंद राठिया को मिली हार
- **सारंगढ़** - शिवकुमारी चौहान को मिली हार
- **चंद्रपुर** - संयोगिता सिंह जूदेव को मिली हार
- **धमतरी** - रंजना दीपेंद्र साहू को मिली हार
- **कोंडागांव** - लता उसेंडी ने जीता चुनाव
- **भटगांव** - लक्ष्मी राजवाड़े ने जीता चुनाव
- **प्रतापपुर** - शकुंतला सिंह पोर्ते ने जीता चुनाव
- **सरायपाली** - सरला कोसरिया को मिली हार
- **खल्लारी** - अलका चंद्राकर को मिली हार
- **खुज्जी** - गीता घासी साहू को मिली हार
- **पंडरिया** - भावना बोहरा को मिली जीत

कांग्रेस महिला प्रत्याशियों में कौन जीता कौन हारा

- **महासमुंद** - डॉ.रश्मि चंद्राकर को मिली हार
- **बैकुंठपुर** - अंबिका सिंहदेव को मिली हार
- **कुरूद** - तारिणी चंद्राकर को मिली हार
- **सिहावा** - अंबिका मरकाम ने जीता चुनाव
- **धरसींवा** - छाया वर्मा को मिली हार
- **सारंगढ़** - उत्तरी गणपत जांगड़े को मिल जीत
- **सरायपाली** - चातुरी नंद को मिली जीत
- **पामगढ़** - शेषराज हरबंश को मिली जीत
- **बिलाईगढ़** - कविता प्राण लहरे को मिली जीत
- **प्रतापपुर** - राजकुमारी मरावी को मिली हार
- **लैलूंगा** - विद्यावती सिदार ने जीता चुनाव
- **पाली तानाखार** - दुलेश्वरी सिदार को मिली हार
- **तखतपुर** - रश्मि आशीष सिंह को मिली हार
- **बालोद** -संगीता सिन्हा ने जीता चुनाव
- **डौंडीलोहारा** - अनिला भेड़िया ने जीता चुनाव
- **भानुप्रतापपुर** - सावित्री मांडवी ने जीता चुनाव
- **खैरागढ़** - यशोदा वर्मा ने जीता चुनाव
- **डोंगरगढ़** - हर्षिता स्वामी बघेल ने जीता चुनाव

महतारी वंदन, कुछ सीटों पर भीतरघात व भाजपा की बेहतर रणनीति पड़ी भारी अविभाजित सरगुजा की आठ सीटों पर

कांग्रेस की हार व भाजपा की जीत के प्रमुख कारण

भटगांव

- भटगांव से भाजपा ने रजवार समाज से ही नए चेहरे महिला प्रत्याशी लक्ष्मी राजवाड़े को मैदान में उतारकर जातिगत काउंटर किया.
- महिला प्रत्याशी और ऊपर से महतारी वंदन योजना भाजपा के लिए संजीवनी साबित हुई.
- इस सीट पर जनता ने परिवर्तन का मन बना रखा था. पहले टिकट मिलने से भाजपा प्रत्याशी ने संगठन के सहयोग से बेहतर रणनीति से चुनाव लड़ा.

रामानुजगंज

- भाजपा ने दिग्गज नेता रामविचार नेताम को मैदान में उतारा व कांग्रेस ने प्रबल दावेदार दो बार के विधायक बृहस्पति सिंह का टिकट काट दिया.
- कांग्रेस ने नए चेहरे डॉ. अजय तिर्की को मैदान में उतारा लेकिन जनता के बीच समर्थन नहीं जुटा सके.
- बृहस्पति सिंह ने खुलकर विरोध नहीं किया, लेकिन भीतरघात की प्रबल संभावना के कारण कांग्रेस प्रत्याशी को बड़ा नुकसान हुआ. बृहस्पति सिंह एक बार रामविचार नेताम को हरा चुके थे.

सीतापुर

- भाजपा ने इस सीट पर चौंकाते हुए पूर्व सैनिक रामकुमार टोप्पो को उम्मीदवार बना दिया, जो पूर्व में ही लोकप्रिय हो चुके थे. महतारी वंदन योजना बड़ा फैक्टर.
- यहां की जनता ने परिवर्तन का मन बना रखा था, पूर्व सैनिक को जगह-जगह यूथ से लेकर महिलाओं तक का स्वस्फूर्त समर्थन मिला.
- वर्तमान विधायक का काफी विरोध था, प्रचार के दौरान ऐसे कई नजारे सामने आए थे.

अंबिकापुर

- शहर में खराब सड़कें-पेयजल की समस्या बड़ा मुद्दा थी, जनता पांच साल तक इससे परेशान व नाराज थी.
- टीएस सिंहदेव को लखनपुर-उदयपुर से बड़ी लीड मिलती थी, लेकिन इस बार भाजपा ने लखनपुर के स्थानीय नेता को उम्मीदवार बना बड़ा दांव खेल दिया.
- सिंहदेव की गृह क्षेत्र में कम मौजूदगी को भाजपा ने शुरू से मुद्दा बना रखा था. इस बार अंबिकापुर ग्रामीण से भी पिछड़े टीएस.

प्रतापपुर

- प्रतापपुर से भाजपा ने नए चेहरे शकुंतला पोर्ते पर दांव खेला और इनके टिकट की घोषणा पहले ही कर दी थी. प्रचार का भरपूर समय मिला.
- कांग्रेस ने दिग्गज नेता डॉ. प्रेमसाय का टिकट काट नए चेहरे राजकुमारी मरावी को उम्मीदवार बनाया था लेकिन इन्हें जनता के बीच समर्थन नहीं मिला.
- डॉ. प्रेमसाय सिंह का क्षेत्र में विरोध था, इसके बावजूद उनके करीबी को टिकट देना कांग्रेस को भारी पड़ा.

सामरी

- सामरी से भाजपा ने नए चेहरे उद्धेश्वरी पैंकरा पर दांव खेला, कांग्रेस ने सीटिंग एमएलए चिंतामणि महाराज का टिकट काट दिया.
- चिंतामणि महाराज के सभी अनुयायियों ने सामरी सहित अन्य सीटों पर भाजपा के पक्ष में मतदान किया.
- कांग्रेस ने नए चेहरे विजय पैंकरा पर दांव खेला, लेकिन उद्धेश्वरी की छवि व संगठन की रणनीति भारी पड़ गई.

लुण्ड्रा

- भाजपा ने इस सीट से चेहरा बदलकर नए चेहरे प्रबोध मिंज को उम्मीदवार बनाया. इनका जुड़ाव लुंड्रा क्षेत्र से लंबे समय से था, वे लगातार सक्रिय थे.
- भाजपा की तरफ से पहले ही टिकट की घोषणा होने से प्रत्याशी को प्रचार का भरपूर समय मिल गया, कांग्रेस इसमें पीछे रह गई.
- 5 साल तक कांग्रेस विधायक की निष्क्रियता भारी पड़ी.

प्रेमनगर

- प्रेमनगर से भाजपा ने कांग्रेस के अनुभवी नेता के सामने नए चेहरे गोंड़ समाज के जमीनी नेता भुलन सिंह मरावी को मैदान में उतारा.
- कांग्रेस विधायक स्वास्थ्यगत कारणों व अन्य वजहों से 5 साल तक फील्ड में निष्क्रिय थे, ये बड़ा मुद्दा काफी पहले से बना हुआ था.
- प्रेमनगर क्षेत्र में विकास कार्यों की धीमी रफ्तार भी बड़ा कारण बनी.

चुनावी रण में 9 मंत्रियों को मिली करारी शिकस्त, उप मुख्यमंत्री सिंहदेव भी हारे

रायपुर. छत्तीसगढ़ विधानसभा की 90 सीटों के लिए मतगणना परिणाम के करीब पहुंच चुकी है. जिसके मुताबिक प्रदेश के 9 मंत्री अपने निकट प्रतिद्वंदी से मात खा गए हैं. इनमें अंबिकापुर से उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव साजा से रविन्द्र चौबे, कवर्धा से मोहम्मद अकबर, आरंग से शिवकुमार डहरिया, कोंडागांव से मोहन मरकाम, सीतापुर से अमरजीत भगत, नवागढ़ से रुद्र गुरु और कोरबा से जय सिंह अग्रवाल चुनाव हार गए हैं.

टीएस सिंहदेव (अंबिकापुर)

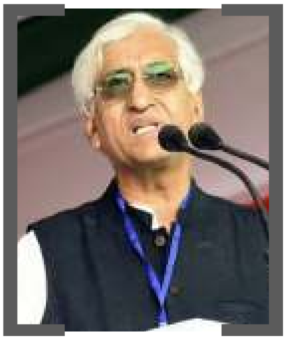

अंबिकापुर (Ambikapur) विधानसभा सीट पर 2008 से कांग्रेस का दबदबा बरकरार रहा है. लेकिन इस बार यहां कांग्रेस का जादू नहीं चला. उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव (TS Singhdeo) यहां से हार गए हैं. भाजपा ने यहां से राजेश अग्रवाल को सिंहदेव के खिलाफ खड़ा किया था. 2018 चुनाव की बात की जाए तो अंबिकापुर में कांग्रेस के टीएस सिंहदेव (TS Singhdeo) ने तीसरी बार 100439 वोटों से जीत दर्ज की थी. टीएस देव ने अनुराग सिंह देव को 39624 वोट से हराया था.

रविंद्र चौबे (साजा)

साजा (Saja) विधानसभा बेमेतरा जिले की महत्वपूर्ण सीट है. ये प्रदेश के शिक्षा मंत्री और कांग्रेस के कद्दावर नेता रविंद्र चौबे (Ravindra Choubey) की सीट है. वे यहां से लगातार चुनाव लड़ते रहे हैं. लेकिन इस बार उन्हें हार का सामना करना पड़ा. 2018 में रवीन्द्र चौबे ने बीजेपी उम्मीदवार लाभचंद बाफना को हराया था. 2018 में यहां कुल 79.8 प्रतिशत मतदान हुआ था. इस चुनाव में रवीन्द्र चौबे (Ravindra Choubey) ने लाभचंद बाफना को 31535 वोटों से हराया था. जो कि कुल वोट का 17.6 प्रतिशत था. इस बार भाजपा ने यहां से ईश्वर साहू को उम्मीदवार बनाया है. बता दें कि बीते महीनों ये सीट बिरनपुर घटना को लेकर चर्चा में थी.

मोहम्मद अकबर (कवर्धा)

कबीरधाम जिले का जिला मुख्यालय होने की वजह से कवर्धा (Kawardha) सीट काफी चर्चित सीट है. 2018 में कांग्रेस उम्मीदवार मोहम्मद अकबर (Mohammad Akbar) ने बीजेपी के अशोक साहू को हराया था. पिछले चुनाव में यहां 82.2% वोटिंग हुई थी. जिसमें मोहम्मद अकबर (Mohammad Akbar) ने अशोक साहू को 24.7% वोटों के मार्जिन (59284 वोटों से) से हराया था. लेकिन इस बार मोहम्मद अकबर यहां से हार गए हैं.

शिव कुमार डहरिया (आरंग)

प्रदेश के नगरीय प्रशासन मंत्री शिव कुमार डहरिया (Shiv Kumar Dahria) यहां से वर्तमान विधायक हैं. लेकिन अब वे यहां से चुनाव हार चुके हैं. आरंग (SC) विधानसभा सीट से साल 2018 में शिवकुमार डहरिया ने बीजेपी उम्मीदवार संजय ढीढी को हराया था. पिछले चुनाव में यहां 76.1 प्रतिशत मतदान हुआ था. 2018 में डहरिया ने संजय ढीढी को 25077 वोटों से हराया था. इस यहां कड़ा मुकाबला देखा जा रहा है. भाजपा ने यहां गुरु खुशवंत सिंह को उम्मीदवार बनाया है. जो कि सतनामी समाज के गुरु हैं. चूंकि शिव डहरिया भी इसी समाज से आते हैं, इस लिहाज से यहां का मुकाबला भी देखने लायक था.

जयसिंह अग्रवाल (कोरबा)

कोरबा (Korba) सीट अनारक्षित सीट है. यह कोरबा का जिला मुख्यालय भी है. प्रदेश के राजस्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल (Jaisingh Agarwal) यहां से वर्तमान विधायक हैं. जो कि ये चुनाव हार चुके हैं. 2018 में कांग्रेस उम्मीदवार जयसिंह अग्रवाल ने बीजेपी उम्मीदवार विकास महतो को हराया था. यहां 71.1 प्रतिशत मतदान हुआ था. जयसिंह अग्रवाल (Jaisingh Agarwal) ने विकास महतो को 11806 वोटों से से हराया था. इस बार भाजपा ने यहां से लखन देवांगन को मौका दिया था.

गुरु रुद्र कुमार (नवागढ़)

नवागढ़ (Nawagarh) सीट बेमेतरा जिले में आती है. जो कि अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है. वर्तमान में कांग्रेस के गुरुदयाल बंजारे यहां से विधायक हैं. लेकिन इस बार पार्टी ने यहां से प्रदेश के पीएचई मंत्री गुरु रुद्र कुमार (Guru Rudra Kumar) को टिकट दी थी. जो कि पार्टी के लिए गलत फैसला साबित हुआ और वे यहां से चुनाव हार गए. रुद्र गुरु सतनामी समाज के गुरु हैं और समाज का बड़ा चेहरा हैं. 2018 में कांग्रेस के गुरुदयाल सिंह बंजारे ने बीजेपी उम्मीदवार पूर्व मंत्री दयालदास बघेल को हराया था. 2018 में यहां 72.2 प्रतिशत वोटिंग हुई थी. गुरुदयाल सिंह बंजारे ने दयालदास बघेल को 33200 वोटों से हराया था.

अमरजीत भगत (सीतापुर)

सरगुजा की सीतापुर (Sitapur) विधानसभा सीट खास सीटों मे से एक है. यह सीट अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है. खाद्य मंत्री अमरजीत भगत (Amarjeet Bhagat) यहां से वर्तमान विधायक हैं. लेकिन वे इस बार यहां से चुनाव हार गये हैं. 2018 में अमरजीत भगत ने भाजपा प्रत्याशी प्रोफेसर गोपाल राम को हराया था. पिछले चुनाव में यहां 78.5 प्रतिशत वोटिंग हुई थी. अमरजीत भगत (Amarjeet Bhagat) ने प्रोफेसर गोपाल राम को 36137 वोटों से हराया था. इस बार अमरजीत भगत के खिलाफ भाजपा ने राम कुमार टोप्पो को उम्मीदवार बनाया था.

मोहन मरकाम (कोंडागांव)

कोण्डागांव सीट (Kondagaon) अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है. प्रदेश के आदिम जाति कल्याण मंत्री मोहन मरकाम (Mohan Markam) यहां से वर्तमान विधायक हैं. ये भी यहां से चुनाव हार गए हैं. 2018 में मोहन मरकाम ने बीजेपी की लता उसेंडी को हराया था. यहां 80.7 प्रतिशत मतदान हुआ था. मोहन मरकाम (Mohan Markam) ने लता उसेंडी को 1796 वोटों से हराया था. इस बार भाजपा ने यहां से फिर से लता उसेंडी पर भरोसा जताया था.

बस्तर संभाग की 8 सीटों पर भाजपा की जीत, PCC चीफ, मरकाम नहीं बचा पाए अपनी कुर्सी

> रायपुर. छत्तीसगढ़ में एक बार फिर भाजपा सरकार की वापसी हो रही है. बस्तर संभाग के सभी सीटों में वोटों की गिनती पूरी हो गई है. 12 सीटों में से सिर्फ 4 में कांग्रेस को जीत मिली है. वहीं भाजपा ने 8 सीटों पर कब्जा जमाया है.

यहां देखें किसे कौन कितने वोट से जीते -

- अंतागढ़ – रूप सिंह पोटाई (कांग्रेस) / विक्रम उसेंडी (भाजपा) – भाजपा 23710 वोट से विजयी
- भानुप्रतापपुर – सावित्री मंडावी (कांग्रेस) / गौतम उइके (भाजपा) – कांग्रेस 30932 वोट से जीती
- कांकेर – शंकर ध्रुव (कांग्रेस) / आशाराम नेताम (भाजपा) – भाजपा 16 वोट से विजयी
- केशकाल – संतराम नेताम (कांग्रेस) / नीलकंठ टेकाम (भाजपा) – 6143 मतों से भाजपा की जीत
- कोंडागांव – मोहन लाल मरकाम (कांग्रेस) / लता उसेंडी (भाजपा) – 19000 मतों से भाजपा जीती
- नारायणपुर – चन्दन कश्यप (कांग्रेस) / केदारनाथ कश्यप (भाजपा) – भाजपा 18930 वोटों से जीती
- बस्तर – लखेश्वर बघेल (कांग्रेस) / मनीराम कश्यप (भाजपा) – कांग्रेस 6434 वोट से जीती
- जगदलपुर – जितिन जायसवाल (कांग्रेस) / किरण देव (भाजपा) – भाजपा 29834 वोट से जीती
- चित्रकोट – दीपक बैज (कांग्रेस) / विनायक गोयल (भाजपा) – भाजपा 8370 वोट से जीती
- दंतेवाड़ा – छविन्द्र कर्मा (कांग्रेस) / चौतराम अटामी (भाजपा) – 16342 वोटों से भाजपा की जीत
- बीजापुर – विक्रम मंडावी (कांग्रेस) / महेश गागड़ा (भाजपा) – कांग्रेस 2706 वोट से विजयी
- कोंटा – कवासी लखमा (कांग्रेस) / सोयम मुक्का (भाजपा) – 1930 वोट से कांग्रेस की जीत

उल्टा पड़ गया सियासी पैतरा: कांग्रेस को ले डूबी ये 22 सीटें, काटा था सिटिंग MLA का टिकट

रायपुर. छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के नतीजे सामने आ चुके हैं. प्रदेश में भाजपा की सरकार बन रही है. हालांकि, इस चुनाव में कांग्रेस को सिटिंग एमलए की टिकट काटना मंहगा पड़ गया. जिसका फायदा बीजेपी को मिला है. जिन 22 विधायकों की टिकट काटी गई थी, वे सभी विधायक 2018 के चुनाव में जीतकर आए थे. ऐसे में कांग्रेस को विधायकों का टिकट काटना और नए चेहरों पर दांव लगाना भारी पड़ गया है. जिन 22 सीटों पर कांग्रेस ने विधायकों की टिकट काटी थी, उसमें से 14 सीटों पर भाजपा ने कब्जा किया है. वहीं कांग्रेस केवल 8 सीट पर ही वापसी कर पाई है. वहीं 1 सीट पर गोडवाना गणतंत्र पार्टी ने कब्जा किया.

इन सभी सीटों पर 2018 चुनाव में कांग्रेस ने दर्ज की थी जीत-

22 सिटिंग विधायकों का टिकट काटना पड़ा मंहगा

- प्रतापपुर-हारे
- बिलाईगढ़- जीते
- मनेंद्रगढ़- हारे
- रामानुजगंज-हारे
- सामरी-हारे
- लैलूंगा-जीते
- पालीतानाखार- जीते
- जगदलपुर-हारे
- धरसीवां-हारे
- रायपुर ग्रामीण-हारे
- कसडोल-जीते
- महासमुंद- हारे
- सरायपाली-जीते
- सिहावा-जीते
- नवागढ़-हारे
- पंडरिया-हारे
- खुज्जी- जीते
- डोंगरगढ़-जीते
- अंतागढ़-हारे
- चित्रकोट-हारे
- दंतेवाड़ा-हारे
- कांकेर-हारे

बता दें कि, 2018 चुनाव में कांग्रेस ने 15 साल बाद सत्ता में वापसी की थी. कांग्रेस ने 68 सीटों के साथ अपनी सरकार बनाई थी. वहीं भाजपा 15 सीट पर ही सिमट कर रह गई थी. 2018 में भाजपा के कई बड़े चेहरों को हार का सामना करना पड़ा था. लेकिन 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा वापसी करते हुए अपनी सरकार बना रही है.

क्या आप जानते हैं...

रेल टिकट के साथ मिलती है कई सुविधाए

रायपुर. ट्रेन का सफर आरामदायक होने के कारण इसे लोग अधिक पसंद करते हैं. रेलवे ट्रेन टिकट के साथ ही यात्रियों को कई सुविधाएं उपलब्ध करवाता है. लेकिन इन सुविधाओं के बारे में कम ही लोग जानते हैं. जबकि इनकी जानकारी होने पर यात्री कई परेशानियों से बच सकता है. आइए जानते हैं इन सुविधाओं के बारे में.

फर्स्ट एड बॉक्स : ट्रेन में सफर के दौरान फर्स्ट एड बॉक्स की सुविधा निशुल्क मिलती है. यह बॉक्स गार्ड और टीटीई के पास होता है. सफर करने के दौरान तबीयत खराब होने पर ट्रेन गार्ड या टीटीई से इसकी मांग कर सकते हैं. ट्रेन में सफर करने वाले प्रत्येक यात्री को रेलवे की ओर से ये सुविधा दी जाती है.

टिकट पर सुविधाएं मामूली लागत पर उपलब्धः यात्री के पास टिकट होने पर उन्हें क्लॉक रूम की सुविधा दी जाती है. इसके तहत स्टेशन पर क्लॉक रूम में अपना सामान मामूली शुल्क देकर जमा करा सकते हैं और लौटकर सामान पुनरू प्राप्त कर सकते हैं. इसके साथ ही एसी-नॉन एसी लॉज, रिटायरिंग रूम, डोरमेट्री की सुविधा भी रेलवे द्वारा निर्धारित शुल्क देकर प्राप्त कर सकते हैं.

वेटिंग रूम : इसके तहत प्लेटफार्म पर बने वेटिंग रूम में कुछ समय के लिए रुकने की सुविधा मिलती है. अगर यात्री की ट्रेन लेट है तो टिकट के क्लास के आधार पर वेटिंग रूम में आराम कर सकते हैं. रेलवे की ओर से यह सुविधा हर यात्री को दी जाती है. केवल यात्री के पास वैध टिकट होना चाहिए.

इंश्योरेंस : ऑनलाइन टिकट बुक करते समय इंश्योरेंस लेने के बारे में पूछा जाता है. इंश्योरेंस लेने पर कई सुविधाएं मिलती हैं. इनमें ट्रेन दुर्घटना की स्थिति में मृत्यु होने या स्थाई विकलांगता होने पर 10 लाख रुपए का मुआवजा मिलता है, जबकि स्थायी आंशिक विकलांगता की स्थिति में 7.5 लाख का इंश्योरेंस कवरेज मिलता है. वहीं, अस्पताल में भर्ती होने और उस दौरान इलाज के लिए दो लाख रुपए तक मिलते हैं. इसके अलावा चोरी, डकैती के तहत भी इंश्योरेंस कवरेज मिलती है, और सबसे अच्छी बात ये है कि यह इंश्योरेंस लेने के लिए आपको मात्र 49 पैसे ही अतिरिक्त खर्च करने पड़ते हैं. दावों का निर्धारण रेलवे क्लैम ट्रिब्यूनल करता है. जो कंडिशन पर डिपेंड करता है.

वाईफाई : गत कुछ वर्षों से रेलवे ने स्टेशनों पर वाईफाई की सुविधा देना शुरू किया है. यह सुविधा भी मुफ्त दी जाती है. अगर आप स्टेशन पर हैं और ट्रेन का इंतजार कर रहे हैं तो रेलवे की इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं. हालांकि कई छोटे स्टेशनों पर यह सुविधा अभी उपलब्ध नहीं है.

बृजमोहन ने बनाया रिकॉर्ड, 67,000 मतों से जीते

रायपुर. दक्षिण से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल ने जीत का बड़ा रिकॉर्ड बनाया है. उन्होंने 67,851 वोटों से जीत हासिल की है, जो इस चुनाव की सबसे बड़ी जीत है. वहीं रायगढ़ से ओपी चौधरी ने 64,443 मतों से जीत हासिल की है. इनके अलावा एक और हॉट सीट पर कवर्धा से भाजपा प्रत्याशी विजय शर्मा ने बड़ी जीत हासिल की है. उन्होंने मंत्री मोहम्मद अकबर को 41,367 मतों से हराया है. जबकि कांकेर विधानसभा सीट से बीजेपी के आशाराम नेताम ने सबसे कम 16 मतों से जीत हासिल की.

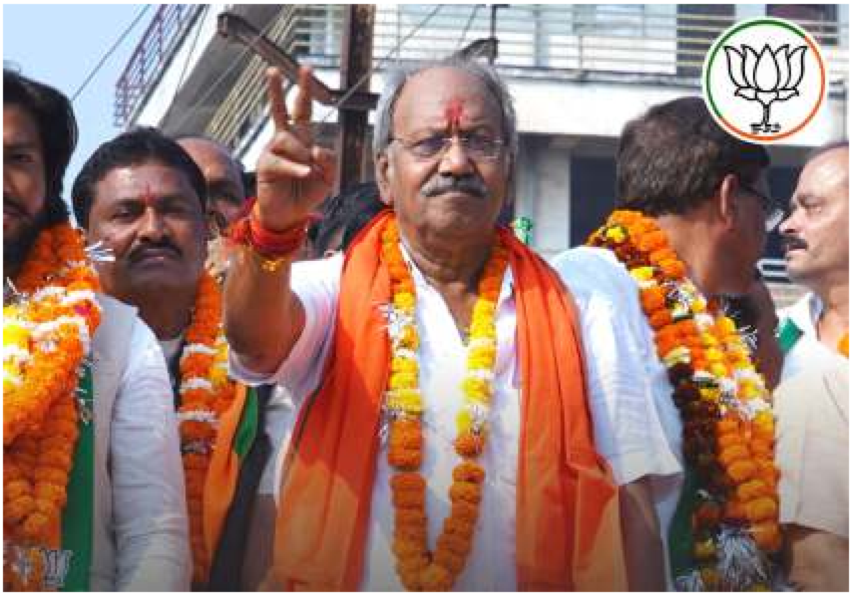

बृजमोहन अग्रवाल के सामने कांग्रेस ने महंत रामसुंदर दास को अपना प्रत्याशी बनाया था. बृजमोहन अग्रवाल को कुल 1,09,263 मत मिले हैं. वही महंत रामसुंदर दास को 41,412 मत मिले हैं. इनके अलावा तीसरे नंबर पर जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ के प्रत्याशी प्रदीप कुमार साहू थे, जिन्हें मात्र 1612 वोट प्राप्त हुए हैं. बता दें कि बृजमोहन अग्रवाल को हराने के लिए कांग्रेस ने पूरी ताकत झोंक दी थी फिर भी वह उनकी जीत को रोक नहीं पाए.

बता दें बृजमोजन अग्रवाल लगातार नौवीं बार चुनाव जीते है. ढेबर परिवार ने बृजमोहन अग्रवाल को हराने के लिए पूरी ताकत झोंक दी थी. कुछ लोगों का तो ये भी कहना था कि बृजमोहन को हराने के लिए जितनी ताकत लगाई जा रही है, उसके बाद भी अगर बृजमोहन को नहीं हरा पाते हैं तो विपक्षियों को मान लेना चाहिए कि वे अजेय हैं और अगली बार से चुनौती देकर अपना समय खराब नहीं करना चाहिए.

कवर्धा से भाजपा प्रत्याशी विजय शर्मा ने बड़ी जीत हासिल की है. इसके पहले 2018 के चुनाव में मोहम्मद अकबर 60 हजार मतों से जीते थे विजय शर्मा की जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं में काफी उत्साह देखा जा रहा है. ओपी चौधरी ने कांग्रेस प्रत्याशी प्रकाश नायक को हराया है, प्रकाश नायक को 64691 मत प्राप्त हुए हैं.

जब नाई को लेकर विधायक राजेश मूणत पहुंच गये कार्यकर्ता के घर

रायपुर. छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने से कार्यकर्ताओ में बेहद उत्साह है. बीते 5 साल से अपने नेता की जीत का सपना संजोए कई पार्टी वर्कर्स 3 दिसम्बर को आये परिणाम के बाद खुशी से फूले नहीं समा रहे हैं. कुछ ने शर्त जीती है,तो कुछ ने जीत को लेकर मन्नत रखी थी. रायपुर के कोटा इलाके के हर्षवर्धन शुक्ला ने रायपुर पश्चिम विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी राजेश मूणत की जीत को लेकर संकल्प लिया था कि जब तक राजेश मूणत चुनाव नहीं जीते जाते, वह बाल और दाढ़ी नहीं बनाएंगे.

हर्षवर्धन शुक्ला की इच्छा पूरी हो गई है. छत्तीसगढ़ में भाजपा को बम्पर जीत के साथ ही सरकार बनाने के लिए बहुमत मिल चुका है. पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेश मूणत एक बार फिर चुनाव जीतकर मंत्री बनने के मार्ग पर हैं,लिहाजा अब उनके अपने बाल कटवाने और दाढ़ी बनवाने का अवसर आ चुका था. हर्षवर्धन शुक्ला की खुशी तब दोगुनी हो गई,जब राजेश मूणत खुद हर्षवर्धन शुक्ला के घर हज्जाम को लेकर पहुंच गए. मूणत ने उनसे आग्रह किया कि अब अपने बाल कटवा लीजिये.

अपने नेता को अपने घर देखकर शुक्ला बहुत खुश हुए और अपनी हजामत करवाई. उन्होंने बताया कि अगर मूणत चुनाव नही जीतते,तो वह अगले 5 साल तक अपना संकल्प जारी रखते हुए बाल नही कटवाते. भारतीय जनता पार्टी के हमारे साथी कार्यकर्ता हर्षवर्धन शुक्ला ने प्रण लिया था कि वह रायपुर पश्चिम विधानसभा में भाजपा की जीत के बाद ही दाढ़ी बनवाएंगे और केश कटवायेंगे... मुझे लगा खुद ही जाकर उन्हें इस कार्य के लिए प्रेरित करना चाहिए... हम सबकी जीत के लिए शुभकामनाएं हर्षवर्धन जी.

पुरंदर मिश्रा का 'चला' करिश्मा ! रिकार्ड मतों से 'जुनेजा' को चटाई धूल

छत्तीसगढ़. छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के दिग्गजों के हार का सिलसिला चल पड़ा है. जनता ने चौंकाने वाले नतीजे दिए है. इसी कड़ी में पुरंदर मिश्रा ने 25 हजार मतों से कुलदीप जुनेजा को करारी हार दी है. इधर, उनके आवास और केंद्रीय कार्यालय में जश्न का माहौल है. वहीं पुरंदर मिश्रा ने कहा रायपुर उत्तर की जनता ने इस बार यहां के स्थानीय विधायक को नाकार दिया है. क्योंकि उन्हें विकास का काम छोड़कर सिर्फ चौक पर कुर्सी लगाकर 5 साल तक सिर्फ नमस्ते ही करते रहे. कहा, यहां की जनता ने कुलदीप जुनेजा को धूल चटा दिया है.

कहा, इस जीत के बाद रायपुर उत्तर को विकास के पथ पर ले जाएंगे. क्योंकि यहां के विधायक विकास के बजाए सिर्फ सीएम हाउस की परिक्रमा और मीडिया में फोटो खींचवाने में ही व्यस्त रहे. गौरतलब है कि सोशल मीडिया में कुछ ऐसी तस्वीरे आई थी, जिसमें लोग जुनेजा वापस जाओ के नारे लगाकार उन्हें भगा भगा दिया था. जिसे लेकर बीजेपी ने जुनेजा को घेर लिया था.

रायपुर ग्रामीण सीट पर BJP की जीत! मोतीलाल साहू ने पंकज शर्मा को हराया

भाजपा के मोतीलाल साहू छत्तीसगढ़ की रायपुर शहर ग्रामीण विधानसभा सीट पर विजयी हुए हैं. उन्होंने 35,750 वोटों से शानदार जीत हासिल की. इस सीट पर साहू और कांग्रेस के पंकज शर्मा के प्रतिस्पर्धा थी. जिसमें साहू को 113,032 वोट मिले. वहीं, इस चुनाव में पंकज शर्मा ने 77,282 वोट पाए.

बता दें कि रायपुर ग्रामीण पर मोतीलाल साहू-पंकज शर्मा के बीच टक्कर थी. पिछले चुनाव में कांग्रेस के सत्यनारायण शर्मा की जीत हुई थी. शर्मा ने 2013 और 2018 में लगातार जीत हासिल की थी. भाजपा द्वारा इस सीट पर पिछले कुछ चुनाव से साहू समुदाय से उम्मीदवारों को मैदान में उतार रही थी क्योंकि रायपुर ग्रामीण में एक महत्वपूर्ण ओबीसी मतदाता हैं.

2008 के परिसीमन के बाद रायपुर ग्रामीण सीट को प्रमुखता मिली. जहां भाजपा के नंदे साहू की जीत हुई थी. जिन्होंने, सत्यनारायण शर्मा को हराया था. हालांकि, शर्मा ने 2013 और 2018 में सीट दोबारा हासिल कर ली. विशेष रूप से, सत्यनारायण शर्मा 1990 से सात बार विधायक चुने गए थे.

कोरोना के तीन साल बाद भी फेफड़े कमजोर

कानपुर. कल्याणपुर का युवक वायरल फीवर से छह दिन में स्वस्थ हो गया. सूखी खांसी ने उसे परेशान किया तो वह हैलट पहुंचा. डॉक्टरों ने केस हिस्ट्री खंगाली तो वह तीन साल पहले कोरोना से संक्रमित हुआ था. वहीं 54 साल की महिला को भी तकरीबन 20 दिन पहले वायरल हुआ. ठीक होने के बाद सूखी खांसी ने जकड़ लिया.

स्वरूप नगर की यह महिला भी कोरोना संक्रमण की मार झेल चुकी हैं. यह महज बानगी मात्र हैं. हैलट में बीते एक माह के दौरान तकरीबन 1125 मरीज ऐसे आए, जो वायरल फीवर से तो समय पर ही स्वस्थ हो गए पर सूखी खांसी ने उन्हें जमकर परेशान किया. मेडिसिन विभाग के डॉक्टरों ने जब उनकी मेडिकल हिस्ट्री के बारे में जाना तो पता चला कि वह कोरोना संक्रमित रहे हैं. इसके आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि कोरोना की जंग जीतने के तीन साल बाद भी फेफड़े कमजोर हैं. मेडिसिन विभाग के डॉक्टरों ने एक माह के दौरान 7500 मरीजों की केस हिस्ट्री तैयार की. डॉक्टरों के अनुसार, 110 मरीज रोज ओपीडी में वायरल से ठीक होने के बाद शरीर दर्द का इलाज कराने आ रहे हैं.

हड्डी को तोड़ रहा बुखार

वायरल फीवर के बदले असर से डॉक्टर भी हैरान हैं. इस बार वायरल फीवर की चपेट में आए लगभग सभी मरीजों के शरीर के अलग-अलग हिस्सों में दर्द है. जोड़ों से लेकर कमर, बांह, पीठ में दर्द की शिकायत लेकर मरीज आ रहे हैं. ऐसी परेशानी वाले मरीजों की आयु 35 से 50 साल के बीच की है.

पीछा नहीं छोड़ रही खांसी

ओपीडी में महीनेभर में करीब दो हजार मरीज ऐसे भी हैं, जो पांच से छह दिन में वायरल फीवर से स्वस्थ हो गए. लेकिन खांसी खासकर सूखी खांसी से पीछा नहीं छूट रहा है. इनकी खांसी ठीक होने में तकरीबन दो सप्ताह से ज्यादा का समय लग रहा है. कुछ में तो दो से तीन महीने बाद भी खांसी पूरी तरह ठीक नहीं हुई.

SHREE NARAYANA HOSPITAL
Quality Health Care for All..

प्रदेश में सर्वप्रथम

250+

ज़िन्दगियों को मिली नई मुस्कान
रोबोटिक नी रिप्लेसमेंट सर्जरी द्वारा

'छत्तीसगढ़ का एकमात्र रोबोटिक नी रिप्लेसमेंट एंड एडवांस स्पोर्ट्स इंज्युरी सेंटर'

परामर्श हेतु	सोमवार से शनिवार सुबह 10:00 से शाम 05:00 बजे तक

10,000 से ज्यादा जॉइन्ट रिप्लेसमेंट के अनुभव के साथ

रोबोटिक सर्जरी के फायदे

- Minimal Invasive Subvastus techniques (छोटे चीरे द्वारा)
- Optimal Accuracy with Precise Cutting
- Longevity - Proper Alignment & Soft Tissue Balancing
- Minimum Pain - Adductor Canal Block द्वारा Pain Management
- Persue Golden Life Robot द्वारा Gold Knee Replacement

सभी कॉर्पोरेट संस्थाओं, शासकीय योजनाओं एवं इंश्योरेंस कंपनियों से कैशलेस सुविधा उपलब्ध

डॉ. राम खेमका
M.S (Ortho)
Trauma Surgeon

डॉ. प्रीतम अग्रवाल
Robotic Joint Replacement Surgeon & Arthroscopic Surgeon

डॉ. सुनील खेमका
HOD, Department of Orthopaedics

डॉ. अम्बरीश वर्मा
M.S (Ortho)
Senior Trauma Surgeon

डॉ. मनीन्द्र भूषण
M.S. (Orhto)
FNB (Spine Surgery)

गंज मंडी के पास, देवेंद्र नगर, सेक्टर-5 के पीछे, पंडरी, रायपुर | 9300373737

ORGALIFE®

Organic Store On Wheel

START YOUR OWN BUSINESS WITH MINIMUM INVESTMENT

LOW INVESTMENT
HIGH MARGIN

- Low investment.
- Zero Royalty.
- Product Support.
- High-Profit Margin.
- Easy to Work Model.
- Setup in Minimum Cost.
- Moisture control & Vacuum packaging.
- Organic cultivation standards have been adhered by our farmers.
- Software Oriented Billing & Inventory System.
- Inventory Support.
- Advertisement Support.
- Get Online Orders Through Our Website.

Connect on

For More Info Please Call: +91- 97551 36336 www.orgalife.in care@orgalife.in

Follow us on